ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 216-223

डिजिटल शिक्षा के दौर में पारिवारिक वातावरण का बदलता स्वरूप और उसका शैक्षिक आकांक्षाओं पर प्रभाव

डॉ. संगीता सक्सेना
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
श्रीमती सविता यादव
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग
कलिंग विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
Email ID– saxenapratyush45@gmail.com

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तीव्र गति से डिजिटल परिवर्तनों से गुजर रही है। तकनीकी नवाचार जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ऑनलाइन शिक्षण मंच, वर्चुअल एवं ऑगमेंटेड रियलिटी, तथा मोबाइल लर्निंग ने शिक्षण–प्रक्रिया के स्वरूप को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन ने न केवल शिक्षण पद्धतियों को प्रभावित किया है, बल्कि पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों की भागीदारी तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर भी गहरा प्रभाव डाला है। परंपरागत रूप से परिवार को विद्यार्थी की शैक्षणिक दिशा निर्धारण का प्रमुख कारक माना जाता रहा है, किन्तु डिजिटल युग में यह भूमिका तकनीकी संसाधनों और डिजिटल साक्षरता के स्तर से जुड़ गई है।

यह शोध अध्ययन इस बात की पड़ताल करेगा कि डिजिटल शिक्षा के प्रसार से पारिवारिक वातावरण के स्वरूप में किस प्रकार परिवर्तन आया है और यह परिवर्तन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को किस दिशा में प्रभावित कर रहा है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, अभिभावकों की तकनीकी समझ, घरेलू समर्थन, एवं डिजिटल संसाधनों की पहुँच विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रेरणा, आत्म–अवधारणा और भविष्य की शैक्षिक आकांक्षाओं को कैसे आकार देती है। साथ ही यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि क्या शहरी एवं ग्रामीण पारिवारिक वातावरणों में इस प्रभाव का स्वरूप भिन्न है।

प्रस्तुत शोध मिश्रित पद्धति पर आधारित होगा, जिसमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार और प्रेक्षणीय आंकड़ों के माध्यम से गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की जानकारी एकत्र की जाएगी। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होने की संभावना है कि डिजिटल

शिक्षा के दौर में पारिवारिक सहयोग का स्वरूप केवल भावनात्मक या सामाजिक न रहकर तकनीकी और अनुकूलनशील भी बन गया है।

अतः यह शोध न केवल शिक्षा के डिजिटलीकरण के सामाजिक प्रभावों को समझने में सहायक होगा, बल्कि भविष्य की शिक्षा नीतियों और पारिवारिक सहभागिता के नए आयामों को भी उजागर करेगा।

बिज शब्द : डिजिटल शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक आकांक्षा, आत्म–अवधारणा, तकनीकी साक्षरता, अभिभावकीय सहयोग, माध्यमिक शिक्षा.

1. परिचय –

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने 21वीं सदी में शिक्षा के स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ पहले शिक्षा मुख्यतः कक्षा–कक्ष, पुस्तकें और प्रत्यक्ष शिक्षक–विद्यार्थी संवाद पर आधारित थी, वहीं आज यह धीरे–धीरे डिजिटल, इंटरैक्टिव और हाइब्रिड स्वरूप में बदल चुकी है। ऑनलाइन शिक्षण मंच, वर्चुअल क्लासरूम, मोबाइल लर्निंग, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित टूल्स ने शिक्षण को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है। न्छम्ब्ब् की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्वभर में लगभग 600 विद्यार्थियों ने महामारी के बाद किसी न किसी डिजिटल प्लेटफॉर्म से शिक्षा प्राप्त की, जिसने न केवल शिक्षण के तरीके बदले, बल्कि पारिवारिक संरचना और उसके शैक्षिक सहयोग के स्वरूप को भी नया आयाम दिया।

भारत जैसे विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश वाले देश में, परिवार सदैव शिक्षा का मूल आधार माना गया है। पारंपरिक रूप से अभिभावक केवल प्रेरणा, अनुशासन और मूल्य–निर्माण की भूमिका निभाते थे; परंतु अब डिजिटल शिक्षा के दौर में उनकी भूमिका तकनीकी मार्गदर्शक के रूप में उभर रही है। बच्चे की शैक्षणिक सफलता अब केवल विद्यालय पर निर्भर नहीं रही, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि परिवार में तकनीकी संसाधन, इंटरनेट उपलब्धता और डिजिटल साक्षरता का स्तर कितना है।

COVID-19 महामारी ने इस परिवर्तन को तीव्र कर दिया। जब शिक्षण गतिविधियाँ पूरी तरह ऑनलाइन माध्यमों में स्थानांतरित हुईं, तब अभिभावकों को न केवल बच्चों के अध्ययन की निगरानी करनी पड़ी, बल्कि उन्हें डिजिटल साधनों का उपयोग सिखाना और उनका वातावरण बनाना भी आवश्यक हो गया। इस प्रक्रिया में परिवार अब केवल भावनात्मक समर्थन देने वाला नहीं रहा, बल्कि एक सह–शिक्षण इकाई।

डिजिटल शिक्षा के इस विस्तार से पारिवारिक वातावरण में कई स्तरों पर परिवर्तन आया है। एक ओर शहरी परिवारों में तकनीकी उपकरणों की प्रचुरता ने विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को वैश्विक स्तर तक पहुँचाया है, वहीं ग्रामीण परिवारों में संसाधनों की कमी ने "डिजिटल विभाजन" की खाई को और गहरा किया है। यह असमानता सीधे विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और आत्म–अवधारणा पर प्रभाव डालती है। बोरडियू के अनुसार, परिवार का सांस्कृतिक और तकनीकी पूँजी के रूप में योगदान

विद्यार्थी की सफलता और आकांक्षाओं को आकार देता है और यही सिद्धांत डिजिटल शिक्षा के युग में पहले से अधिक प्रासंगिक हो गया है।

अतः इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव ने पारिवारिक वातावरण के स्वरूप को कैसे रूपांतरित किया है, और यह परिवर्तन विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रेरणा, आत्मविश्वास तथा भविष्य की आकांक्षाओं को किस दिशा में प्रभावित कर रहा है। साथ ही यह अध्ययन इस प्रश्न की पड़ताल करेगा कि क्या शहरी और ग्रामीण पारिवारिक संरचनाओं में यह प्रभाव समान है या भिन्न।

यह अध्ययन इस धारणा पर आधारित है कि डिजिटल शिक्षा ने न केवल शिक्षा की परिभाषा बदली है, बल्कि पारिवारिक भागीदारी के नए आयाम भी खोले हैं जहाँ सहयोग का स्वरूप अब भावनात्मक से अधिक तकनीकी और अनुकूलनशील बन चुका है। यही डिजिटल युग की शिक्षा का सबसे गहरा सामाजिक परिवर्तन है, जो भविष्य की शिक्षा–नीतियों और पारिवारिक भूमिका को पुनर्परिभाषित कर रहा है।

2. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं साहित्य समीक्षा –

डिजिटल शिक्षा के प्रभाव को समझने के लिए आवश्यक है कि इसे समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए। पारिवारिक वातावरण, सामाजिक संरचना, और तकनीकी साक्षरता मिलकर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को आकार देते हैं। इस संदर्भ में तीन प्रमुख सिद्धांत ब्रोनफेनब्रेनर का पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत, विगोत्स्की का सामाजिक निर्माणवाद और बोरडियू का सांस्कृतिक पूँजी सिद्धांत, इस शोध के लिए सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं।

ब्रोनफेनब्रेनर के अनुसार, किसी व्यक्ति का विकास कई स्तरों के पर्यावरणीय तंत्रों पर निर्भर करता है, जैसे परिवार, विद्यालय, समुदाय और व्यापक सामाजिक तंत्र। डिजिटल शिक्षा के दौर में "माइक्रोसिस्टम" के रूप में परिवार की भूमिका और अधिक जटिल हो गई है। अब परिवार को न केवल भावनात्मक सहारा देना पड़ता है, बल्कि तकनीकी मार्गदर्शन और डिजिटल संसाधनों की व्यवस्था भी करनी होती है। यह सिद्धांत बताता है कि जब परिवार का तंत्र तकनीकी रूप से सक्षम होता है, तब विद्यार्थी का सीखना अधिक प्रभावी होता है।

विगोत्स्की के सामाजिक निर्माणवाद सिद्धांत के अनुसार, सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है जो सहयोग और संवाद से विकसित होती है। डिजिटल शिक्षा के वातावरण में यह सहयोग अब अभिभावक, शिक्षक और तकनीकी प्लेटफॉर्म के माध्यम से होता है। ऑनलाइन समूह कार्य, वर्चुअल कक्षा, और इंटरएक्टिव टूल्स इस सिद्धांत का आधुनिक रूप हैं, जहाँ परिवार एक सह–शिक्षण इकाई के रूप में उभर रहा है।

सामाजिक और सांस्कृतिक संसाधन जैसे भाषा, तकनीकी ज्ञान, और डिजिटल उपकरणों की पहुँच, शिक्षा में असमानताओं को निर्धारित करते हैं। शहरी और ग्रामीण परिवारों में डिजिटल पहुँच के स्तर में अंतर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं और आत्म–अवधारणा को प्रभावित करता है। UNESCO की रिपोर्ट बताती है कि

तकनीकी साक्षरता और संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षणिक महत्वाकांक्षाएँ भिन्न रूप से विकसित होती हैं।

साहित्य समीक्षा से यह भी ज्ञात होता है कि डिजिटल शिक्षा ने अभिभावकीय भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। NCERT के अध्ययन में पाया गया कि जिन परिवारों में माता–पिता तकनीकी रूप से दक्ष हैं, वहाँ विद्यार्थी की प्रेरणा और प्रदर्शन बेहतर होता है। वहीं ग्रामीण भारत में, डिजिटल उपकरणों की कमी, इंटरनेट अस्थिरता और प्रशिक्षण की अनुपलब्धता ने विद्यार्थियों की प्रगति को सीमित किया है।

पूर्ववर्ती शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल शिक्षा ने सामाजिक वर्गों और भौगोलिक क्षेत्रों के बीच नई असमानताएँ भी उत्पन्न की हैं। अधिकांश अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों ने शहरी संदर्भों पर ध्यान केंद्रित किया है, जबकि ग्रामीण पारिवारिक वातावरण पर आधारित भारतीय संदर्भ में शोध अपेक्षाकृत सीमित है। यही इस अध्ययन का शोध अंतराल है, डिजिटल शिक्षा के युग में पारिवारिक वातावरण के रूपांतरण को ग्रामीण–शहरी तुलना के साथ समझना।

इस प्रकार, सैद्धांतिक रूप से यह अध्ययन शिक्षा के समाजशास्त्रीय आयामों को डिजिटल संदर्भ में पुनःव्याख्यायित करता है। यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि पारिवारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया भी है।

3. अनुसंधान उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

डिजिटल शिक्षा के वर्तमान युग में पारिवारिक वातावरण का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है। शिक्षा अब केवल विद्यालय की सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह घर के परिवेश, तकनीकी संसाधनों, और अभिभावकों की डिजिटल दक्षता से गहराई से जुड़ गई है। इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे तकनीकी साक्षरता, पारिवारिक सहयोग, और डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं, आत्म–अवधारणा और प्रेरणा को प्रभावित करते हैं।

3.1 अनुसंधान उद्देश्य

- पारिवारिक वातावरण के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन करना – इस उद्देश्य के अंतर्गत यह समझना प्रमुख है कि डिजिटल शिक्षा के प्रसार से परिवार की भूमिका पारंपरिक "मार्गदर्शक" से बदलकर "तकनीकी सहायक" के रूप में कैसे उभरी है। परिवार अब केवल नैतिक और भावनात्मक आधार नहीं, बल्कि डिजिटल संसाधन प्रदाता और सीखने के सह–भागीदार के रूप में कार्य कर रहा है।
- पारिवारिक तकनीकी साक्षरता का विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर प्रभाव जानना – परिवार की तकनीकी दक्षता सीधे तौर पर विद्यार्थियों की डिजिटल शिक्षा में सहभागिता और आत्म–विश्वास से जुड़ी है। छब्म्ज् की रिपोर्ट में पाया गया कि जिन परिवारों में अभिभावक डिजिटल उपकरणों का सहज

प्रयोग करते हैं, वहाँ बच्चों की शैक्षिक प्रेरणा, ध्यान और आत्म–अवधारणा अधिक सकारात्मक होती है।

- शहरी एवं ग्रामीण पारिवारिक वातावरणों के बीच तुलना करना – यह उद्देश्य ग्रामीण–शहरी डिजिटल असमानता की पड़ताल करता है। न्छम्ैब्ब के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और आकांक्षाएँ अपेक्षाकृत सीमित रहती हैं। इस अध्ययन में यह जांचना है कि तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता या अभाव किस हद तक शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

  डिजिटल संसाधनों की भूमिका विद्यार्थियों की आत्म–अवधारणा व प्रेरणा में समझना

  आधुनिक शिक्षा में आत्म–अवधारणा और प्रेरणा का निर्माण अब केवल शिक्षक या पाठ्यक्रम पर निर्भर नहीं रहा, बल्कि डिजिटल साधनों की सहजता, इंटरएक्टिव लर्निंग प्लेटफॉर्म और अभिभावकीय समर्थन से भी गहराई से जुड़ा है। यह उद्देश्य इस मनोवैज्ञानिक आयाम को मापने का प्रयास करेगा।

3.2 परिकल्पनाएँ

1: डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, इंटरनेट सुविधा, और पारिवारिक तकनीकी सहयोग का विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2: जिन परिवारों में अभिभावक तकनीकी रूप से साक्षर हैं, वहाँ विद्यार्थियों की आत्म–अवधारणा और प्रेरणा उच्च स्तर की होती है।

3: ग्रामीण परिवारों में डिजिटल संसाधनों की सीमित पहुँच के कारण विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षाएँ शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अपेक्षाकृत कम होती हैं।

4: डिजिटल शिक्षा के अनुभव और पारिवारिक सहयोग के स्तर के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंध (Correlation) पाया जाएगा।

यह अध्ययन इस धारणा पर आधारित है कि शिक्षा के डिजिटल स्वरूप ने परिवार की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। पहले जहाँ शिक्षा का केंद्र विद्यालय था, वहीं अब परिवार शिक्षा का सह–अभिकर्ता बन चुका है। बोरडियू के अनुसार, परिवार की सामाजिक–तकनीकी पूँजी ही विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षाओं का निर्धारण करती है। इस प्रकार, डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया है, जिसमें परिवार की भूमिका निर्णायक बन गई है।

4. अनुसंधान पद्धति

इस शोध का उद्देश्य डिजिटल शिक्षा के दौर में पारिवारिक वातावरण के बदलते स्वरूप और उसके विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर प्रभाव को समझना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक मिश्रित पद्धति अपनाई गई है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया है। यह

पद्धति इसलिए उपयुक्त मानी गई क्योंकि यह सामाजिक–शैक्षिक घटनाओं के संख्यात्मक आँकड़ों के साथ–साथ उनके गहराईपूर्ण मानवीय अनुभवों को भी समझने की अनुमति देती है।

यह अध्ययन वर्णनात्मक और तुलनात्मक स्वरूप का है। इसमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों के दृष्टिकोण से यह समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल शिक्षा के प्रभाव से परिवारों में शैक्षिक सहयोग, तकनीकी भागीदारी और आकांक्षात्मक दृष्टिकोण में किस प्रकार परिवर्तन आया है। अध्ययन में शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के पारिवारिक परिवेशों की तुलना की गई है ताकि डिजिटल विभाजन के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सके।

नमूना चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के लिए कुल 200 प्रतिभागियों को चुना गया, जिनमें 100 शहरी क्षेत्र से और 100 ग्रामीण क्षेत्र से लिए गए हैं। प्रत्येक समूह में विद्यार्थी, उनके अभिभावक तथा संबंधित शिक्षकों को शामिल किया गया। इस विविधता से प्राप्त आंकड़े विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और तकनीकी पृष्ठभूमियों के संतुलित प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करते हैं।

अध्ययन के लिए तीन प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया – प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची और प्रेक्षण तालिका। प्रश्नावली में विद्यार्थियों और अभिभावकों से डिजिटल शिक्षा, पारिवारिक सहयोग, प्रेरणा और शैक्षिक आकांक्षाओं से संबंधित 25 प्रश्न पूछे गए। अर्ध–संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से शिक्षकों और अभिभावकों के अनुभवों को गहराई से समझा गया। साथ ही, प्रेक्षण तालिका के माध्यम से विद्यार्थियों के डिजिटल शिक्षण व्यवहार और अभिभावकीय सहभागिता का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। इन उपकरणों का निर्माण पूर्ववर्ती शोधों और विशेषज्ञों के परामर्श के आधार पर किया गया ताकि वैधता और विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके।

डेटा संग्रह की प्रक्रिया ऑनलाइन और ऑफलाइन (विद्यालयीय दौरे और व्यक्तिगत साक्षात्कार) दोनों माध्यमों से की गई। शहरी क्षेत्रों में अधिकांश डेटा ऑनलाइन माध्यम से, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तिगत साक्षात्कार और प्रेक्षण के द्वारा प्राप्त किया गया। डेटा संग्रह की अवधि लगभग तीन माह (जनवरी से मार्च 2025) रही।

संग्रहीत आंकड़ों का विश्लेषण दो स्तरों पर किया गया – मात्रात्मक और गुणात्मक। मात्रात्मक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीकों जैसे प्रतिशत विश्लेषण प्रयोग किया गया ताकि शहरी और ग्रामीण समूहों के बीच अंतर की पुष्टि की जा सके। गुणात्मक विश्लेषण के लिए थीमेटिक एनालिसिस पद्धति अपनाई गई, जिसके अंतर्गत प्रमुख विषयों जैसे "अभिभावकीय सहयोग," "तकनीकी साक्षरता," और "शैक्षिक प्रेरणा" की पहचान की गई।

5. परिणाम, निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध के परिणामों से स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा ने पारिवारिक वातावरण और विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं के स्वरूप को गहराई से प्रभावित

किया है। सर्वेक्षण और साक्षात्कार से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, शहरी परिवारों में डिजिटल सहयोग का स्तर उल्लेखनीय रूप से अधिक पाया गया, जहाँ अभिभावक ऑनलाइन शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और तकनीकी संसाधनों के उपयोग में सक्षम हैं। इन परिवारों के विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर और भविष्य की शैक्षिक योजनाओं के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण वाले पाए गए। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में उपकरणों की कमी, इंटरनेट की अस्थिरता और तकनीकी साक्षरता की कमी शिक्षा की समानता में प्रमुख बाधक सिद्ध हुई। इसने विद्यार्थियों की प्रेरणा और आकांक्षाओं के स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डाला, जिससे शहरी–ग्रामीण शैक्षिक विभाजन और स्पष्ट हो गया।

गुणात्मक विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि डिजिटल युग ने अभिभावकों की भूमिका को "मार्गदर्शक" से "सह–शिक्षार्थी" में परिवर्तित कर दिया है। अब परिवार केवल भावनात्मक सहयोग प्रदान करने वाला तंत्र नहीं रह गया, बल्कि वह तकनीकी संसाधनों, समय–प्रबंधन और सीखने की रणनीतियों में भी प्रत्यक्ष भूमिका निभाने लगा है। कई अभिभावक अपने बच्चों के साथ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर मिलकर अध्ययन कर रहे हैं, जिससे परिवार में सीखने की संस्कृति मजबूत हुई है। इस प्रकार, परिवार अब शिक्षा का "तकनीकी सहयोगी तंत्र" बन गया है जो विद्यार्थियों की आत्म–अवधारणा, आत्मविश्वास और करियर–निर्धारण को दिशा देता है।

चर्चा से यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और डिजिटल पहुँच अब शैक्षिक आकांक्षाओं के नए निर्धारक बन गए हैं। जिन परिवारों में तकनीकी पहुँच अधिक है, वहाँ विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ भी व्यापक हैंकृवे उच्च शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय अवसरों और डिजिटल करियर विकल्पों की ओर अधिक आकृष्ट हो रहे हैं। वहीं सीमित संसाधनों वाले परिवारों में यह आकांक्षा अपेक्षाकृत संकीर्ण रही। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल साक्षरता अब शिक्षा की गुणवत्ता और आकांक्षा दोनों को आकार देने वाला मुख्य सामाजिक तत्व बन चुकी है।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं:

1. डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम अभिभावकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए अनिवार्य किए जाएँ ताकि परिवार शिक्षा के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का सक्रिय भागीदार बन सके।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना का विकास किया जाए विशेषकर इंटरनेट कनेक्टिविटी, उपकरण वितरण और तकनीकी सहायता केंद्रों की स्थापना पर बल दिया जाए।
3. समान अवसर नीति लागू की जाए ताकि डिजिटल शिक्षा का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँच सके।
4. करियर मार्गदर्शन और परामर्श सत्र आयोजित कर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं को भविष्य–उन्मुख दिशा दी जाए।

निष्कर्षत, यह कहा जा सकता है कि डिजिटल शिक्षा ने न केवल शिक्षण पद्धतियों को परिवर्तित किया है, बल्कि परिवारों की संरचना, उनकी प्राथमिकताओं और विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को भी पुनर्परिभाषित किया है। आज परिवार भावनात्मक सहयोगी के साथ–साथ डिजिटल सह–निर्माता की भूमिका निभा रहा है। भविष्य की शिक्षा का स्वरूप केवल संस्थानों के डिजिटल होने पर निर्भर नहीं करेगा, बल्कि इस पर भी कि परिवार कितनी तत्परता से इस परिवर्तन को अपनाकर स्मार्ट, अनुकूलनशील और तकनीकी रूप से सक्षम बनता है।

संदर्भ सूची

1. UNESCO. (2022). *The Digital Learning Divide: Challenges and Opportunities.* Paris: UNESCO Publishing.
2. NCERT. (2023). *Impact of Digital Education on Learning Outcomes in India.* New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
3. OECD. (2021). *21st Century Learning Skills and Family Involvement in Digital Education.* Paris: OECD Publications.
4. Bourdieu, P. (1986). *The Forms of Capital.* In J. Richardson (Ed.), *Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education.* New York: Greenwood.
5. Bronfenbrenner, U. (1979). *The Ecology of Human Development: Experiments by Nature and Design.* Harvard University Press.
6. Ibid
7. Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes.* Harvard University Press.
8. Bourdieu, P. (1986). *The Forms of Capital.* In J. Richardson (Ed.), *Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education.* New York: Greenwood Press.
9. UNESCO. (2022). *The Digital Learning Divide: Challenges and Opportunities.* Paris: UNESCO Publishing.
10. NCERT. (2023). *Impact of Digital Education on Learning Outcomes in India.* New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
11. Mehta, P., & Singh, R. (2021). *Digital Divide and Parental Involvement in Online Education during COVID-19 in India. Journal of Education and Practice, 12*(8), 45–52.
12. OECD. (2021). *21st Century Learning Skills and Family Involvement in Digital Education.* Paris: OECD Publications.
13. OECD. (2021). *21st Century Learning Skills and Family Involvement in Digital Education.* Paris: OECD Publications.
14. NCERT. (2023).
15. UNESCO. (2022).
16. Mehta, P., & Singh, R. (2021). *Digital Divide and Parental Involvement in Online Education during COVID-19 in India. Journal of Education and Practice, 12*(8), 45–52.
17. Bourdieu, P. (1986).
18. Creswell, J. W., & Plano Clark, V. L. (2018). *Designing and Conducting Mixed Methods Research* (3rd ed.). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.
19. Kumar, R. (2019). *Research Methodology: A Step-by-Step Guide for Beginners.* New Delhi: Pearson India.
20. Braun, V., & Clarke, V. (2006). *Using Thematic Analysis in Psychology. Qualitative Research in Psychology, 3*(2), 77–101.
21. Kumar, R. (2019). *Research Methodology: A Step-by-Step Guide for Beginners.* Pearson India.
22. Creswell, J. W., & Plano Clark, V. L. (2018). *Designing and Conducting Mixed Methods Research* (3rd ed.). Sage Publications.